# ❋ 13 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

## ❋ ज्ञान-

1] हम नये विश्व में सूर्यवंशी बनते है। हम नई दुनिया के मालिक चक्रवर्ती बनते हैं। स्वदर्शन चक्रधारी सो विष्णुवंशी बनने में एक सेकण्ड लगता है। बनाने वाला है शिवबाबा। शिवबाबा विष्णुवंशी बनाते हैं, और कोई बना न सके। यह तो बच्चे जानते हैं विष्णुवंशी होत हैं सतयुग में, यहाँ नहीं। यह है विष्णुवंशी बनने का युग। तुम यहाँ आते ही हो विष्णुवंशी में आने लिए, जिसको सूर्यवंशी कहते हो।

2] शिवबाबा बच्चों को कहते हैं– हे बच्चों, तुम सतयुग में सूर्यवंशी थे। शिवबाबा आया था सूर्यवंशी घराना स्थापन करने। बरोबर भारत स्वर्ग था। यही पूज्य थे, पुजारी कोई भी नहीं थे। पूजा की कोई सामग्री नहीं थी। इन शास्त्रों में ही पूजा की रस्म-रिवाज आदि लिखी हुई है। यह है सामग्री।

3] इस समय सारी दुनिया में रावण राज्य, भ्रष्टाचारी राज्य है। श्रेष्ठाचारी देवी-देवताओं का राज्य सतयुग में था, अभी नहीं है। फिर हिस्ट्री रिपीट होगी। श्रेष्ठाचारी कौन बनावे? यहाँ तो एक भी श्रेष्ठचारी नहीं। इसमें बड़ी बुद्धि चाहिए। यह है ही पारस बुद्धि बनने का युग। बाप आकर पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बनाते हैं।

4] बाप कहते हैं पतित रावण बनाने हैं, पावन बनाता हूँ। बाकी यह तो जैसे गुड़ियों की पूजा करते रहते हैं। उनको यह पता नहीं रावण का 10 शीश क्यों देते हैं? विष्णु को भी 4 भुजा देते हैं। परन्तु कोई ऐसा मनुष्य थोड़ेही कभी होता है। अगर 4 भुजा वाला मनुष्य होता तो उससे जो बच्चा पैदा होता वह भी ऐसा होना चाहिए। यहाँ तो सबको 2 भुजा हैं। कुछ भी जानते नहीं।

5] आप बच्चे जानते हो कि अति के बाद ही अन्त होना है। तो हर प्रकार की हलचल अति में होगी, परिवार में भी खिटखिट होगी, मन में भी अनेक उलझनें आयेंगी, धन भी नीचे ऊपर होगा। लेकिन जो बाप के साथी हैं, सच्चे हैं उनका जबाबदार बाप है। ऐसे समय पर मन बाप की तरफ हो तो निर्णय शक्ति से सब पार कर लेंगे। साक्षी दृष्ट हो जाओ तो बाप की शक्ति से हर परिस्थिति को सहज हल कर लेंगे।

## ❋ योग-

1] गैरन्टी करते हैं– मेरे को याद करने से तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म होंगे और साथ ले जाऊंगा। फिर तुमको नई दुनिया में जाना है।

## ❋ धारणा-

1] गायन है– आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल। तुमको याद है तुम पहले-पहले आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले ही आये फिर 84 जन्म ले पतित बने हो, अबि फिर पावन बनना है। पुकारते भी हैं ना– पतित-पावन आओ, तो सर्टीफिकेट देते हैं कि एक ही सतगुरू सुप्रीम आकर पावन बनाते हैं। खुद कहते हैं इसमें बैठकर मैं तुमको पावन बनाता हूँ।

2] सदा इसी खुशी में रहना है कि हम स्वदर्शन चक्रधारी सो नई दुनिया के मालिक चक्रवर्ती बनते हैं। शिवबाबा आये हैं हमें ज्ञान सूर्यवंशी बनाने। हमारा लक्ष्य ही यह है।

3] अब सारे किनारे छोड़ घर चलने की तैयारी करो।

## ❋ सेवा-

1] एक बाप के संग से स्वयं को पारसबुद्धि बनाना है। सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। कुसंग से दूर रहना है।